SL-2
Aug-20

①
Date: 7.8.20

शिक्षा के विकास में ईसाई मिशनरियों की भूमिका

जैसे-जैसे ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में अपने स्थापित की ओर बढ़ रही थी उसी समय ईसाई मिशनरियाँ भी धर्म प्रचार हेतु अपना पाँव फैलाती जा रही थी। ईसाई मिशनरियों ने ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार के साथ ही बहुत सारे अंग्रेजी प्राथमिक विद्यालय, हाईस्कूल इत्यादि खोले जिससे देश में अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार हुआ। ईसाई मिशनरियों के साथ ही क्षेत्रीय भाषाओं में बाइबल का अनुवाद करवाया, क्षेत्रीय भाषाओं के विकास में मदद की, बहुत सारी हिन्दू समाज की बुराइयों को दूर करने के लिए सरकार से प्रस्ताव पास कराए। बहुत सारे बोर्ड [illegible]

एक पुरानी कहावत है कि यूरोप के लोग एशिया के देशों में तीन 'G' की तलाश में आए थे — Gold, Glory and God. जब यूरोप के लोगों ने भारत में अपनी फैक्ट्रियाँ स्थापित कर ली, ईसाई मिशनरियों ने भी धीरे-धीरे भारत में अपनी गतिविधियाँ शुरू कर दीं। ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार में पुर्तगाली यूरोपियों में सर्वाधिक सक्रिय थे। चूँकि वे बल प्रयोग भी किया करते थे इसलिए जल्द ही लोगों में अलोकप्रिय हो गए।

इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी इस मामले में बहुत ही सचेत रही और उसके प्रारंभिक दिनों में ईसाई मिशनरियों को प्रोत्साहित नहीं किया। कंपनी ने यह घोषणा कर रखी थी कि वह भारतीयों के धर्म के मामले में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करेगी। कंपनी अपने व्यापार और साम्राज्य के विस्तार में अधिक रुचि रखती थी और जब तक ये लक्ष्य प्राप्त नहीं हो जाते वह किसी तरह का उपद्रव नहीं चाहती थी।

18वीं शताब्दी तक ईसाई मिशनरी मुख्य रूप से दक्षिण भारत में ही सक्रिय थी लेकिन 19वीं शताब्दी के आरंभ से वह उत्तर भारत में भी अपना पाँव फैलाने लगी, विशेषकर बंगाल में मिशनरी गतिविधियाँ प्रारंभ हो गईं। चार्टर एक्ट 1813 ई. से भारत में ईसाई मिशनरियों के प्रवेश और गतिविधियों पर से हर प्रकार की रोक समाप्त कर दी गई और उन्हें भारत में रहकर धर्म प्रचार करने की खुली छूट दे दी गई। इससे पूरे देश में मिशनरी गतिविधियाँ बढ़ गईं।

अनेक ईसाई मिशनरियों में से श्रीरामपुर मिशनरी की भूमिका उल्लेखनीय थी। श्रीरामपुर में डेनिश मिशनरी कायम हुई क्योंकि इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी ईसाई धर्म को फैलाने में कोई रुचि नहीं दिखला रही थी। इसके संस्थापक विलियम केरी (William Carey) थे। वे इंग्लैंड के एक छोटे से गाँव में मोची

का काम करते थे। विलियम वार्ड और जोशुआ मार्शमेन ने उनकी मदद की।

विलियम केरी और उनके सहयोगी मिशनरियों ने पहली बार भारत सरकार का ध्यान भारत के हिंदू समाज में फैली सामाजिक बुराइयों की ओर आकृष्ट कराया। ये बुराइयाँ थी - सती प्रथा, जाति प्रथा, छुआ-छूत आदि। इन लोगों ने इन कुरीतियों के खिलाफ निरंतर लिखना शुरू किया और सरकार से यह मांग की कि इन बुराइयों पर रोक लगायी जाए।

मई 1829 ई० में उन्होंने विलियम बेंटिंक से अपील की कि वे सती प्रथा पर रोक लगाएं। केरी ने सरकार से यह आग्रह भी किया कि बालिकाओं की हत्या के खिलाफ कानून बनाया जाए। इन दोनों अमानवीय कुरीतियों पर ब्रिटिश इंडिया के शासनकाल में पाबंदी लगा दी गई। उन्होंने बहुपत्नीवाद और कुलीनवाद का भी खुलकर विरोध किया। श्रीरामपुर मिशनरी ने दलितों के उत्थान और महिलाओं के कल्याण के लिए भी अनेक आंदोलन छेड़े।

यूरोप और अमेरिका की अनेक मिशनरियाँ भारत में काम करने लगी थीं। इन मिशनरी संस्थाओं में लंदन मिशनरी सोसायटी, द बैपटिस्ट मिशनरी सोसायटी और चर्च मिशनरी सोसायटी प्रमुख थीं। द बैपटिस्ट मिशनरी सोसायटी (श्रीरामपुर मिशन) ने यहाँ के लोगों पर अपनी गहरी छाप छोड़ी। सामाजिक कुप्रथाओं के विरुद्ध आवाज उठाने के साथ-साथ इन मिशनरियों ने अनेक मानवीय कार्य भी किए। खासकर प्राकृतिक आपदाओं - जैसे-अकाल, वर्षा, बाढ़ आदि के मौकों पर खुलकर राहत कार्य किए। दुर्भाग्य से उनके इन कामों का मूल उद्देश्य ईसाई धर्म का प्रचार-प्रसार था और वे यह साबित करना चाहते थे कि केवल ईसाई धर्म ही पूरी मानवता का विकास चाहता है और दुनिया में जितने भी धर्म हैं ईसाई धर्म उन सबों में सबसे श्रेष्ठ है।

यहाँ यह उल्लेख करना भी उचित प्रतीत होता है कि यूरोप की वे संस्थाएँ जो भारत में काम कर रहे मिशनरियों को कोष मुहैया कर रही थीं, वह मानवीय कार्यों के लिए नहीं थे, बल्कि धर्मांतरण के लिए होते थे, लेकिन भारतीय मिशनरियाँ यह समझ रही थीं कि ये मानवीय कार्य जमीनी स्तर पर काम करने का आधार उपलब्ध कराता है।

धर्मांतरण को प्रोत्साहित करने के लिए लार्ड डलहौजी की सरकार ने जातीय अस्पृश्यता निवारण अधिनियम-1850 पारित किया जिसके तहत एक व्यक्ति धर्मांतरण के पश्चात् भी अपने पुरखों की संपत्ति का वारिस होगा।

8/8/20

विकास और शिक्षा जगत में भी मिशनरियों की भूमिका रही है। वे विश्वास करते थे कि पश्चिम की शिक्षा पद्धति ईसाइयत को फैलाने में बहुत सहयोगी सिद्ध होगी।

श्रीरामपुर मिशनरी ने जहाँ बंगाल में अनेक मिशनरी स्कूल खोले वहीं अमेरिका की मिशनरी संस्थाएँ बंबई और मद्रास में अधिक सक्रिय रहीं। लड़कियों की शिक्षा पर भी विशेष ध्यान दिया गया। बैपटिस्ट फिमेल स्कूल सोसायटी ने जो श्रीरामपुर मिशनरी के तहत काम करती थी, ने ढाका, चिटगाँव (चटगाँव) और कलकत्ता में स्कूल खोले। लंदन मिशनरी सोसायटी ने 1818 में चिनसुरा में पहला महाविद्यालय खोला।

फीमेल जुवेनाइल सोसायटी ने कलकत्ता में 6 गर्ल्स स्कूल खोले। इसके अलावा चर्च मिशनरी सोसायटी ने बंबई और मद्रास प्रेसीडेंसी में गर्ल्स स्कूलों की स्थापना की। प्रेसबाइटेरियन चर्च ने देहरादून, सियालकोट और गुजरांवाला में लड़कियों के स्कूल खोले। मेथोडिस्ट ने नैनिताल में लड़कियों के स्कूल खोले, जबकि लूथेरियन चर्च ने गंटूर और मद्रास प्रेसिडेंसी में लड़कियों के स्कूल खोले। ये स्कूल उन हिंदुओं और मुसलमानों के लिए बहुत बड़ा धक्का थे जो लड़कियों की शिक्षा के विरोधी थे।

ईसाई मिशनरियों ने क्षेत्रीय भारतीय भाषाओं - जैसे बंगाली, मराठी, तमिल और तेलगु के विकास में भी बहुत योगदान किया। उन्होंने इन भाषाओं में बाइबिल का अनुवाद कराया और यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि ईसाइयत का संदेश भाषाओं और क्षेत्रों से ऊपर है।

फोर्ट विलियम कॉलेज में बांग्ला विभाग का अध्यक्ष मिशनरी विलियम कैरी था। उसने अनुवाद को प्रोत्साहित किया। कैरी ने बांग्ला भाषा के व्याकरण को संकलित किया। उसके प्रयासों से बांग्ला-अंग्रेजी शब्दकोष का प्रकाशन हुआ। मराठी भाषा एवं साहित्य का भी विकास हुआ। मराठी पंडित वैद्यनाथ शर्मा के सहयोग से विलियम कैरी ने पहला मराठी व्याकरण ग्रंथ प्रकाशित कराया। इस प्रकार क्षेत्रीय भाषाओं में पाश्चात्य प्रभाव से प्रगतिशील साहित्य का सृजन हुआ। विविध भाषाओं के साहित्य ने अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य की विषयवस्तु, संरचना और शैली को अपनाया।

ईसाई मिशनरियों का योगदान 8/8/20 (4)

इस तरह हम पाते हैं कि ईसाई मिशनरियों ने देश में प्राथमिक शिक्षा के विकास, अंग्रेजी के विकास में बहुत योगदान के लिए, क्षेत्रीय भाषाओं के विकास में भी योगदान किया भले ही उनका प्रमुख ईसाई धर्म का प्रचार-प्रसार होना था तथापि उनके मिशनरियों ने हिन्दू समाज में फैली कुरीतियों को दूर करने के लिए सरकार से आग्रह किया एवं अनेक बुरी प्रथाओं का अंत करवाया।

ईसाई मिशनरियों की गतिविधियों ने भारतीय बुद्धिजीवियों को भी प्रेरित किया कि वे भी समाज सुधार के क्षेत्र में आगे बढ़ें। भारतीय धर्मों और यहाँ के लोगों और सामाजिक कुरीतियों पर उनके लगातार होने वाले हमलों से भारतीयों में भी जागृति आई और वे भी उन सामाजिक बुराइयों और कमियों से अवगत हुए।

अंत में हम देखते हैं कि ईसाई मिशनरियों के कारण छोटे स्तर पर ही सही भारत में शैक्षिक विकास हुआ एवं लोगों में सामाजिक चेतना आयी।

MD SANAM
ASST-PROF. HISTORY
C.S. College